

किर्मय (von किम्) adj. aus was bestehend RV. 4, 33, 4.

किपदेतिका (von कियत् + 1. एत्) f. eine den Kräften entsprechende Anstrengung H. 300. कियदेतिका TRIK. 1, 1, 128.

कियत् (von 1. कि) P. 5, 2, 40. 6, 3, 90. Vop. 7, 94. am Ende eines adv. comp. कियत्तम् gaṇa शरदादि zu P. 5, 4, 107. 1) pron. adj. interr. wie gross, wie weit, wie viel, von welchem Umfange, wie mannigfaltig, von welcher Beschaffenheit; कियत् adv. wie weit, wie viel, wie (quam): इदं मे अग्रे कियते पावकामिनते गुरुं भारं न मन्म RV. 4, 3, 6. कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता 10, 27, 12. कियत्स्विन्द्रे अर्थेति मातुः कियत्स्विनुर्जनितुः 4, 17, 12. किययूपमश्मेधस्य वित्य CAT. Br. 13, 4, 2, 17. कियेदामु स्वयतिष्कन्द्याते RV. 10, 27, 8. कियता स्कन्मः प्र विवेश भूतं कियेद्विष्यन्वाशये इत्य AV. 10, 7, 9, 8. NIR. 6, 20. कियात्या कियति + घ्रा) wie lange her: कियात्या यत्समया भवति RV. 1, 113, 10. कियात्या प्रथमः सर्गं ग्रामाम् 2, 30, 1. — कियत्यधानि तदनम् in wie grosser Entfernung ist dieser Wald MBu. 14, 766. कतमो मार्गः कियानिति च शंस मे R. 2, 92, 8. कियता मूल्येनैतत्पुस्तकं गृहीतम् PAÑKAT. 127, 12. कियान्कालस्तवैवं स्थितस्य संज्ञातः 242, 14. स पुष्यदत्तः कियता कालिनास्मानुपैष्यति KATHAS. 2, 17. कियती भक्षणशक्तिस्ते PAÑKAT. 223, 22. पश्य आनन्द कियते ते मोक्ष-पुरुषा बहुपुण्याभिस्कारमभिस्कारिष्यन्ति LALIT. in BURN. Intr. 304, N. 3. कियतो गजतुरगपदातयः VET. 28, 18. गतव्यमस्ति कियत् SIB. D. 63, 16. ज्ञास्यसि कियदुज्ञो मे रक्षति ÇIK. 13. प्रकाशं निर्गतस्तावदवलोकयामि। कियदवशिष्टं रज्ज्वा इति 46, 7. ग्रयं भूतावासा विमृश कियतो याति न दशाम् ÇANTIC. 1, 25. कियदेतद्धनं पुंसः von welcher Bedeutung ist dieser Besitz für einen Mann? KATHAS. 3, 49. कियानर्थः mit dem instr. welcher Nutzen erwächst aus? Bhaṅg. P. 3, 16, 36. 5, 10, 14. 6, 16, 42. तदन्तैरमुभिः कियत् was nützt ein von denen gegebenes Leben? 1, 13, 22. पश्यामो हि कियतो ऽत्र विपत्स्यते कियच्चिरम् wie lange VID. 198. कियच्चिर-पार्षपुत्रः पुनरस्माकं स्मरिष्यति wie bald ÇIK. Ch. 126, 13. कियदूरे स जलाशयः wie weit PAÑKAT. 32, 4. — 2) pron. adj. indef. gering, wenig, unbedeutend; adv. ein wenig, etwas: एवं ते त्रयो ऽपि जलतरि कियतं कालं सुभाषितगोष्ठोसुखमनुभूय पुनर्जलं प्रविशन्ति PAÑKAT. 246, 13. III, 249. HIT. 36, 16. सर्पान्याघ्रान्गान्नाम्निहृन्द्रेषोपयैर्वशीकृतान्। रजोति कियती मा-त्रा धीमतामप्रमादिनाम् || PAÑKAT. 1, 46. कियन्मात्रो (von geringer Bedeutung) ऽतो वराको गतो महाजनस्य कुपितस्याग्रे 81, 18. कियन्मात्रास्ते ता-तस्य शत्रवः 47, 4. कियजगतीह न साध्यते KATHAS. 3, 11. PRAB. 61, 13. Bhaṅg. P. 3, 3, 14. अर्थेः संयमवार्थान्प्राप्नोति कियददुतम् das ist kein grosses Wunder KATHAS. 6, 28. निजहृदि विकसतः सतिः सतः कियतः BHANTR. 2, 71. Wie nahe die Bed. des interr. an die des indef. streift, zeigen die beiden letzten Beispiele, wo man zwischen beiden Auffassungen die Wahl hat. यावत्कियदूरं गच्छति। तावत् u. s. w. PAÑKAT. 229, 20. HIT. 86, 6. कियद्वक्रं etwas gebogen MIT. 143, ult. — 3) mit folgendem घपि quantuscumque: तदेतस्यापि कियतमपि ग्रासं देहि PAÑKAT. 224, 21. — 4) mit folgendem च und vorangehendem यावत् quantuscumque, quaticumque: यावतीः कियतीश्वेनाः पृथिव्यामध्योषधीः AV. 8, 7, 13. यावत्कि-यच्च व्रतं व्रतयित्वा CAT. Br. 3, 2, 2, 19. मैत्रेण यनुषोपन्याचरति यावत्कि-यच्चोपन्याचरति 6, 3, 4, 10. — Vgl. den Artikel 1. क. und कीवत्.

कियाम्बु n. eine best. Wasserpflanze: कियाम्बुत्रं रोक्तु पाकदूर्वा व्यत्कक्षा RV. 10, 16, 13.

II. Theil.

कियाद् m. Fuchs (Pferd) H. 1238. — Wohl ein Fremdwort.

कियेधा (कियत् + धा) adj. vielumfassend, capax; ein Beiw. Indra's वृत्रस्य चिद्दियेन मर्मं तुजनीशानस्तुजता कियेधाः RV. 1, 61, 6. 12. NIR. 6, 20.

किरु s. 3. कर.

किरे nom. ag. von 3. कर P. 3, 1, 135. Vop. 26, 32. — m. ein wildes Schwein AK. 2, 3, 2. H. 1287. Vgl. किरि, किरि.

किरक m. Schreiber TRIK. 2, 8, 26. — Viell. von 3. कर.

किरण (von 3. कर) m. Uṇ. 2, 79. 1) Staub, Stäubchen: यद्ध ते विश्वा गिर्यश्चिद्विभ्या दृच्छन्तः किरणा नैर्न RV. 1, 63, 1. यूयं कृ भूमिं कि-रणं न रेजय 5, 39, 4. एवेदं नूयन्किरणः समेज्ञात् 10, 27, 3. रेणुं ररिक्तकि-रणं दृच्छान् 4, 38, 6. Die NAIGH. 1, 3 (vgl. mit NIR. 2, 15) angenommene Bedeutung Zügel scheint aus der letzten Stelle geschlossen zu sein, in welcher aber das parallele रेणु noch deutlicher für unsere Auffassung zeugt. — 2) Lichtstrahl (gedacht als feine staubartige Theile, die von dem leuchtenden Körper ausströmen) AK. 1, 1, 2, 34. 3, 3, 23, 140. H. 100. यथा हि किरणा भानोस्तपतीह चराचरम् MBu. 3, 1929. धर्ककिरणं Suçr. 1, 20, 9. 172, 17. रविं ÇIK. 37. चन्द्रं ÇANTIC. 4, 6. शशाङ्कं PAÑKAT. 223, 3. Dhṛtas. 67, 18. Çiç. 4, 58. शशिसूर्यं Suçr. 1, 170, 20. मन्दकिरणत्वा-द्भानोः Suçr. 1, 20, 12. स्वकिरणपरिवेषोद्भूतः प्रदीयाः RAGH. 3, 74. र-त्वावलीकिरणकर्बुरे पर्यङ्के HIT. 29, 11. Vgl. 4. कर 1. und तुषारकिरण. — 3) Sonne H. 93. — 4) nicht deutlich ist die Bed. des Wortes in fol-genden Stellen: सैव पुष्टौ किरणैव भुज्यै शृष्टीवानेव हवमा गमिष्टम् RV. 10, 106, 4. वितती किरणौ दौ तावा पिनष्टि पूरुषः AV. 20, 133, 1. मातुष्टे किरणौ दौ 2.

किरणमालिन् (किरण Lichtstrahl + माला Kranz) m. Sonne HIR. 11.

किरणायलीप्रकाश (किरण - घवती + प्र) m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. 203, N. 2.

किरात 1) m. a) N. eines verachteten Gebirgsvolks Z. f. d. K. d. M. 2, 26. fgg. 33. fgg. LIA. I, 39. 444. 448, N. 1. 833. गुरुभ्यः किरातम् VS. 30, 16. PAÑKAT. Br. in Ind. St. 1, 32. ein Kriegergeschlecht, welches क्रिया-लोपात् und ब्राह्मणादर्शनेन zu Çûdra herabgesunken ist nach M. 10, 44. zu den Mleçkha gezählt AK. 2, 10, 21. TRIK. 3, 3, 153. H. 934. an. 3, 237. MED. I. 104. वज्रपुण्ड्रकिरतिपु MBu. 2, 584. किरातानामधिपतीन-जयतस्त 1089. फलमूलाशना ये च किराताश्चर्मवाससः। क्रूरशस्त्राः क्रूरकृ-तः 1863. 6, 358. 364. 376. AR. 3, 22, 43. R. 4, 40, 28. fgg. 44, 20. VARAH. BRH. S. 14, 18. 30. VP. 173. 190. 192. पूर्णापूर्णे नाने परिचितजनवचने तथा नित्यम्। मिथ्याक्रयस्य कथनं प्रकृतिरियं स्यात्किरातानाम् || PAÑKAT. I, 13. am Hofe des Königs VIKR. 76, 5. RATNĀV. 27, 9 (vgl. SIB. D. 36, 7. fgg.). Schrift der Kirāta LALIT. 122. — b) Zwerg H. an. MED. LIA. II, 637. Hierher wohl कुञ्जकिरात n. sg. der Bucklige und der Zwerg gaṇa गवाश्चादि zu P. 2, 4, 11. Vgl. किलात. — c) Pferdehirt SIBASV. im ÇIKDR. — d) N. einer Pflanze (s. किराततिक्त) TRIK. H. an. MED. — 2) f. ई a) ein weibliches Individuum aus dem Volke der Kirāta Verz. d. B. H. No. 324 (?). (नृपः) नैसंश्रयः पार्श्वगता किरातीमुपात्तबालव्यजनो बभाषे RAGH. 16, 57. Daher किराती = चामरधारिणी Trägerin des Fliegenwe- dels MED. Citat beim Sch. zu ÇIK. 20, 16. Von der Göttin Durgā heisst es: किराती चीरवसना चीरसेनानमस्कृतम् HARIV. 10248. Daher किराती